ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

बहाई धर्म की स्थापत्य कला : विभिन्न देशों के सांस्कृतिक समन्वय के सन्दर्भ में संक्षिप्त विश्लेषण

रूचिका सैनी
शोध छात्रा,
इतिहास विभाग,
रा.ऋ.भ.मत्स्य विश्वविद्यालय,
अलवर, राजस्थान

सारांश

''समस्त पृथ्वी एक देश है और मानव जाति इसके नागरिक हैं।''

इस उद्देश्य से बहाउल्लाह ने बहा'ई धर्म की नींव ईरान में रखी। इस धर्म का उद्भव सन् 1844 में माना जाता है। उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक 'किताब–उल–असदक' में उनके सिद्धान्तों का उल्लेख मिलता है। उन्होंने इस किताब में बहा'ई पूजा सदन को 'महारेक–अल–अकर' (भगवान के स्थान) के रूप में उल्लेखित किया है। यद्धपि यह धर्म ईरान में जन्मा तथापि स्थानीय विरोध के कारण, यहाँ बहा'ई मन्दिर निर्मित नही हो पाया। बहा'ई मन्दिर की बुनियादी, आध्यात्मिक व कलात्मक विशेषताओं को बहाउल्लाह ने अपने लेखन में वर्णित किया है। कालान्तर उनके विवरण धीरे–धीरे उनके पुत्र अब्दुल–अल–बहा के लेखन में विस्तृत मिलते हैं। अब्दुल–बहा के द्वारा निर्धारित किया गया कि मन्दिर के स्थापत्य के चरित्र को नौ तरफा परिपत्र आकार में विभाजित किया जाना चाहिए। यद्यपि गुम्बद निर्माण बहा'ई मन्दिर की मुख्य विशेषता रही है तथापि इसे संरचना का मुख्य हिस्सा नहीं माना गया है।

तुर्किस्तान, भारत, युगाण्ड़ा, पनामा, सामोआ, आस्ट्रेलिया, जर्मनी और उत्तरी अमेरिका में बहा'ई धर्म के पूजा सदनों की स्थापना की गई है। प्रत्येक पूजा सदन में, आस–पास की स्वदेशी संस्कृति के मन्दिरों की वास्तुकला तथा प्रतीकात्मक सजावट की झलक मिलती है। उदाहरण के लिए तुर्किस्तान के अख्ताबाद शहर में सबसे पहले बने पूजा सदन में बारहवीं शताब्दी की फारसी संस्कृति का समन्वय़ दिखाई देता है, जिसमें मीनारें तुर्की शैली में बनाई गई हैं। इस प्रकार अफ्रीकी रंग और झोपड़ी डिजाईन युगाण्ड़ा हाउस में स्पष्ट है, जिसमें बड़े गुम्बद के आकार की छतरियाँ और प्राकृतिक रंग हैं। आस्ट्रेलिया हाउस में अंग्रेजी, एशियाई और मूलतः स्वदेशी संस्कृति की छाप है, जो खिड़कियों के ऊपर अरबी और छोटे गुम्बदों का प्रयोग करते हैं। जर्मन हाउस में, युद्ध पूर्व शैली का मिश्रण किया गया है। पनामेनियान हाउस में पूर्व कोलम्बियन की संस्कृति की झलक मिलती है। भारत हाउस, हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म, बौद्ध धर्म की संरचनाओं के पारस्परिक रूपों को जोड़ता है। मूल अमेरिकन परम्पराओं के प्रतीक डेविड के स्टार और क्रोस को विलमिट्ट हाउस ऑफ वॉरशिप में प्रदर्षित किया गया है।

मुख्य शब्द : महारेक–अल–अकर, गुम्बद, बहा, स्यानागोगी, स्तम्भ, एज्टेक स्टेप, इण्टरव्यू स्टेयर स्टेप, नक्काषी, डेविड का स्टार, स्वास्तिक, क्रॉस, बोधिसत्व।

प्रस्तावना

बहा'ई धर्म की मान्यता है कि अंक नौ व्यापकता व एकता का प्रतिनिधित्व करने वाला सबसे बड़ा एकल अंक है। जो अरबी शब्द 'बहा' के संख्यात्मक मान के रूप में हैं, जिसमें शब्द 'बहा–उल्लाह' और बहा'ई प्राप्त हुए हैं। वर्तमान बहा'ई मन्दिर बगीचों से घिरे हैं, जिन्हें 'मौन शिक्षक' के रूप में भी जाना जाता है।[1] बहा'ई धर्म की धार्मिक डिजाईनों में आस–पास की परम्पराओं का इस्तेमाल किया गया है। उदाहरण के लिए यहूदी सदन की स्यानागोगी की शैलियों को शामिल किया गया है, जिसका मतलब 'समुदाय से सम्पर्क करें और सम्बन्ध करें' हैं।[2] स्यानागोगी का अर्थ उपासना गृह या सभा गृह होता है। इस शब्द का प्रयोग यहूदियों के प्रार्थना स्थल के लिये किया जाता है। यहूदी मन्दिरों में सामान्यतः प्रार्थना के लिये एक विशाल गृह (मुख्य पूजा स्थल) होता है, जिसका प्रयोग अध्ययन के लिये, सामाजिक कार्यों के लिये तथा कार्यालय के रूप में किया जाता है।

प्रमुख बहा'ई मन्दिरों का उल्लेख निम्न प्रकार है–

अख्ताबाद, तुर्कमेनिस्तान

इसका निर्माण काल सन् 1902–1908 है। इस पूजा का सदन का डिजाईन उस्ताद अली अकबर द्वारा तैयार किया गया। वकील–उल–डावालीद्ध की देख–रेख में इसका निर्माण किया गया।[3] पूजा सभा बागानों से घिरा हुआ था, बगीचे के चारों ओर चार कोनों में एक विद्यालय, एक छात्रावास, एक अस्पताल, एक ग्राउण्डस्किपरो इमारत बनी हुई थी।[4] इस इमारत में बारहवीं शताब्दी की ईरानी विरासत पर आधारित कई रूप और डिजाईन शामिल हैं। इसके प्रवेश द्वार में ईरान व तुर्की के लिये दो मीनारें थीं। यह वास्तुकला के प्राचीन शैली के आधुनिक रूपान्तर को दिखाता है। बहा'ई परम्परा ने चार मेहराब वाले एक वर्ग के आकार की इस्लामिक शैली के प्रभाव से ऊपर उठकर इस डिजाईन में चार की बजाय नौ पक्षों पर बल दिया है।[5] इसमें अद्वितीय वास्तुकला तकनीकों, प्रतीकात्मक पैटर्न और डिजाईनों का उपयोग करके बहा'ई धर्म ने एक गुम्बदाकार छत के नीचे एक ऐसा सभा सदन बनाया है, जिसमें अन्य धर्म के लोग व स्वदेशी धर्म के लोग पवित्र वास्तुकला के माध्यम से अपनी विरासत की खूबसूरती को देखते हैं।

काम्पाला, युगाण्ड़ा

किकिया हिल पर स्थित अफ्रीका का हाउस ऑफ वॉरषिप चाल्स मेसन रेमे द्वारा डिजाईन किया गया था। इसका निर्माण कार्य सन् 1958–1961 के मध्य पूरा हुआ था। इमारत की ऊंचाई 125 फीट है और गुम्बद का व्यास 124 फीट तथा 800 व्यक्तियों के एक साथ बैठने की व्यवस्था है।[6] पूजा सदन को वास्तुकार ने जानबूझकर एक झोपड़ी के समान बनाने की कोषिष की है और इसमें ग्रामीण इलाके में प्रचलित शानदार रंगों का प्रयोग किया गया है। इससे आगुन्तकों को स्थानीय संस्कृति की भव्यता की झलक मिलती है। इन्टीरियर रंगों में पीला, नीला और लाल रंगों का प्रयोग क्रमषः पिण्ड़, समुद्र और पृथ्वी के सूचक है। मन्दिर अन्दर से लगभग बाहरी दुनिया का हिस्सा लगता है। दीवारें सफेद हैं और स्तम्भ का रंग हल्का हरा है। इसके जब नौ महान दरवाजे खुलते हैं तो देखने वालों को इतना प्रभावित करता है कि यह स्वंय ईष्वर की रचना हो।

सिड़नी, ऑस्ट्रेलिया

यह चार्ल्स मेसन रेमी द्वारा डिजाईन किया गया। इसका निर्माण कार्य सन् 1957 में वास्तुकार जॉन ब्रोगेन की देख–रेख में प्रारम्भ हुआ था तथा सन् 1961 में मन्दिर के द्वार सबके लिये खोल दिये गए। इसमें 600 व्यक्तियों के बैठने की क्षमता हैं। यह सात एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। इसके तहखाने के तल से ऊंचाई 130 फीट है।[7] इस पूजा सदन को 'सिडनी के एन्जिल' नाम से भी जाना जाता है। इतावली वास्तुकार, एण्ड्रिया पालडिडियो द्वारा अपनाई गयी शैली को छोटे–छोटे गुम्बदों में दिखाया गया है, जो कुछ खिड़कियों की ओर झुकते हुये दिखाई देते हैं।[8] यह मन्दिर ऑपल रतन जैसा दिखाई देता है जिसे कारण इसे 'ऑस्ट्रेलिया के रत्न' के नाम से भी जाना जाता है।[9] इसमें कई अलग–अलग स्थापत्य शैली का प्रयोग किया गया है। इस पर अंग्रेजी व एशियाई वास्तुकला का प्रभाव दिखाई देता है। इसके बागानों में मूलतः पौधे हैं जिनमें नीलगिरी के पौधे, देशी मटर तथा युद्ध के मैदान के दृष्य दिखाई गये हैं।

फ्रैंकफर्थ, जर्मनी

यह ट्यूनौस पहाड़ी पर बनाया गया है। इसका डिजाईन ट्यूटो रोचोल द्वारा बनाया गया है। यह स्टील, एल्युमिनियम व ग्लास द्वारा निर्मित है। इसमें 500 व्यक्तियों के बैठने की सीटें हैं। आधार से इसका व्यास 158 फीट है तथा इसकी ऊंचाई 92 फीट है। इसके इण्टीरियर में 27 खम्भे लगे हुए हैं। यहाँ ग्लास की दीवारें प्रमुख हैं।[10] 570 ग्लास पैनलों पर सूरज के प्रतिबिम्ब द्वारा केन्द्रीय गोल चक्राकार प्रकाष उज्ज्वल होता है। यह मन्दिर 4 जुलाई 1964 को पूर्ण हुआ।[11] बहा'ई वास्तुकला ने दुनिया भर में अपने पूजा सदनों में सफलता पूर्वक आध्यात्मिक, कलात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय तत्वों के प्रभाव को दर्षाया है।

पनामा, लैटिन–अमेरिका

यह पूजा सदन सन् 1969–72 के मध्य बनाया गया। इसके वास्तुकार पीटर टेल्लासन था।[12] यह मन्दिर पूर्व कोलम्बियन शैली से सम्बन्धित है। इसकी छत में पैटर्न बनाने के लिये संगमरमर की चिप्सों का प्रयोग किया गया है। गुम्बद हजारों अण्डाकार चिप्सों से बना है। प्रवेश द्वार तीन आयामी डिजाईन द्वारा निर्मित है। इसमें तीन खम्भों में समबाहु त्रिकोण बना हुआ है।[13] इसमें बाहरी ईंट की दीवारों को 'एज्टेक स्टेप' में बनाया गया है, जो उनके प्राचीन मन्दिर में पाये जाते थे। इसमें 'इण्टरव्यू स्टेयर स्टेप' पैटर्न उनके जीवन के बाद की यात्रा का प्रतिनिधि है, जो मध्य अमेरिका की परम्पराओं में बहुत ही सामान्य विषय है। इन प्रारूपों को प्रायः मिक्ताक के परम्परागत बुनकरों द्वारा गलीचा बुनने की तकनीक के रूप में काम में लिया जाता था। वे बादलों, तेज धूप, पहाड़ का प्रतिनिधित्व करते हैं।[14] इस पूजा गृह में वास्तुषिल्प व आध्यात्म के एकाकार का प्रयास किया गया है। इसमें पारम्परिक व आधुनिक डिजाईनों के मध्य समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

एपिया, सामोआ

पनामा तथा सामोआ के टेम्पल डिजाईन समान ही है। इसके वास्तुकार होसेंन अमानत बताते हैं कि व्यक्तियों की जीवन शैली पर उष्ण कटिबंधीय जलवायु का विशेष प्रभाव रहता है। इस टेम्पल को डिजाईन करते समय जो दृष्टिकोण युगाण्ड़ा तथा पनामा के पूजा सभाओं का था वह यहाँ भी प्रभावी रहा है।[16] इसकी छत में बड़ी चोटी बनाकर हवा व प्रकाष के आने–जाने की व्यवस्था को बनाया गया है। प्रषान्त क्षेत्र की परम्परागत, लकड़ी की नक्काषी एवं तापा कपड़े पर की गई डिजाईन को मन्दिर की बाहरी तथा आन्तरिक दीवारों पर उकेरा गया है। इस मन्दिर की डिजाईन में स्थानीय व्यक्तियों के परामर्ष के समन्वय का भी प्रयास किया गया है।

षिकागो, अमेरिका

षिकागो के पास स्थित में बहा'ई टेम्पल स्थित है। यह लुई बुर्जियो द्वारा सन् 1919 में डिजाईन किया गया था। यह विश्व में सबसे अलंकृत बहा'ई मन्दिर हैं।

इसमें 1197 व्यक्तियों के एक साथ बैठने की व्यवस्था है। यह आधार से षिखर तक 191 फीट ऊँचा हैं। गुम्बद के बाहरी हिस्से का व्यास 90 फीट है।[17] भवन निर्माण के दौरान बुर्जियों ने बहा'ई आस्था के सिद्धान्तों को प्रस्तुत करने की कोषिष की है। इस दौरान उन्होंने निम्न प्रतीकों को शामिल किया :– सर्किल, त्रिकोण, पिरामिड़, नाग, सूर्य, अग्नि, पाँच से नौ अंक लेकर डेविड का स्टार, स्वास्तिक तथा क्रॉस।[18] हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, यहूदी धर्म, ईसाई धर्म की वास्तुकला की विशेषताओं के साथ अमेरिकी मूल परम्पराओं के मन्दिरों के मेहराब और खम्भे भीतर प्रकट होते हैं। पुर्नजागरण काल के दौरान स्थापत्य कला की एक अवधारणा थी कि एक गुम्बद जो पुर्नजागरण के आकार को दर्षाता है, जो केवल इटली में है परन्तु वह अब अमेरिका में भी देखा जा सकता है।

नई दिल्ली, भारत

इसका काम 24 अक्टूबर 1986 को पूरा हुआ। इसके वास्तुकार फारीबुर्ज साहब हैं। इस मन्दिर की ऊंचाई 40.8 मीटर है। इसका व्यास 70 मीटर है। मन्दिर में 1200 व्यक्तियों के एक साथ बैठने की व्यवस्था है। यह 26.7 एकड़ जमीन पर फैला हुआ है।[19] इस पूजा सदन की बनावट के आकार की वजह से इसे 'लोटस टेम्पल' कहा जाता है।

लोटस टेम्पल की विशेषताएं

कमल डिजाईन का महत्व (भारतीय सन्दर्भ में)

कमल भगवान की अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। यह पवित्रता एवं कोमलता का प्रतीक है। महाभारत में प्रजापति ब्रह्मा को, विष्णु की नाभि से उगने वाले कमल से, उभरते हुए वर्णित किया गया है। जब देवता ध्यान करते हैं तो कमल के लिए उनकी गहरी श्रद्धा होती है। कई शताब्दियों में पूजा के साथ जुड़े बौद्ध लोक कथाओं में बोधिसत्व अवलोकितेष्वर को कमल से पैदा हुआ माना और आमतौर पर उन्हें हाथ में कमल लिये दर्षाया जाता है। बौद्ध अपनी प्रार्थना में उनकी स्तुति करते हैं :– ''ओउम् मणि पदम् हुम्''।

बुद्ध कहते हैं कि हमें कमल के समान होना चाहिए, गन्दे पानी में रहने के बावजूद वह अपने परिवेष से निर्दोष बना रहता हैं।

प्राकृतिक वेंटिलेषन

लोटस टेम्पल में प्राकृतिक वेंटिलेषन का प्रयोग किया गया है। यह धुंआ परीक्षण के परिणाम पर आधारित है, जो मन्दिर के एक मॉडल (जो लन्दन के इम्पीरियल कॉलेज में किया गया था) पर आधारित है। नतीजे बताते हैं कि तहखाने व शीर्ष पर खुलने के साथ इमारत एक चिमनी की तरह काम करती है।[20] हॉल के अन्दर से गर्म हवा बाहर निकलती है। हवाओं के पानी के पूल के ऊपर से गुजरने से ये हवायें ठण्ड़ी हो जाती हैं तथा वातावरण को ठण्ड़ा बनाये रखती है।

1. आन्तरिक गुम्बज गोलाकार है तथा कमल के फूल के अन्दरूनी हिस्से के बनाने के बाद बाह्य पैटर्न बनाया गया है।
2. रोषनी हॉल में उसी प्रकार प्रवेष करती है जैसे वह कमल के फूल की पंखुड़ियों के भीतर की ओर जाती है।
3. इसमें इण्टीरियर गुम्बद एक कली की तरह है, जिसमें 27 पंखुड़ियाँ हैं तथा 9 प्रवेष द्वारा पंखुड़ियों की डिजाईन को पूरा करते हैं।

बहाई वास्तुकला की विशेषताएं

1. मन्दिर निर्माण के हर चरण में वास्तुकला तथा डिजाईन के मामले में अपनी अनोखी विशेषतायें हैं।
2. ये मन्दिर विभिन्न देशों में बने हैं, जो अपने–अपने क्षेत्र की प्रसिद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्षाते हैं और साथ ही बहा'ई धर्म में व्याप्त सभी धर्मों की एकता का प्रतिनिधित्व करते हैं।
3. ये बहा'ई धर्म के रहस्यों की सादगी और ताजगी को प्रकट करते हैं।
4. सदनों को एक रोषनदान के रूप में कार्य करने के लिये डिजाईन किया गया है।
5. इसमें पूजा सभा के भीतर चित्र, मूर्तियाँ या छवियाँ प्रदर्षित नहीं की गई है।
6. पूजा सदन के गुम्बद के नीचे एक अविभाजित कमरे के होने की बात कही गई है।

निष्कर्ष

कला तथा आध्यात्म का मूल्यांकन व्यक्तिपरक मूल्यांकन हैं। कलाकारों ने पूजा सदनों की वास्तुकला की प्रषंसा की है। फारीबुर्ज साहब का कथन है कि 'यह मन्दिर (लोटस टेम्पल), काम करता है, बहा'ई मन्दिर के सार के रूप में भगवान की एकता, धर्मों की एकता और मानवता की एकता है।''

इसकी वास्तुकला किसी अन्य युग की वास्तुकला से भिन्न हैं क्योंकि यहाँ अलग–अलग जातियों, अलग–अलग पृष्ठभूमि और अलग–अलग धर्मों के व्यक्तियों को एक केन्द्रीय क्षेत्र में एकजुट किया जाता है, जहाँ शान्तिपूर्ण और सांमजस्य के विचार प्रबल होते हैं। गुम्बदों, उद्यानों, परिपत्र मार्गों, अलंकरण, दरवाजों की सजावट, रंग, ज्यामितीय डिजाईन, आन्तरिक सजावट सभी मानव जाति की एकता के बहा'ई सिद्धान्तों व दुनिया की महान धार्मिक परम्पराओं की एकता की पुष्टि करते हैं। मन्दिर के सौन्दर्य और कौषल के लिये सबसे बड़ा समर्थन स्थानीय व्यक्तियों से आता है, जो बार–बार यहाँ आते हैं।

''....पूजा के स्थान और पूजा के लिए आराधनाओं का उद्देश्य केवल एकता ही है, ताकि अलग–अलग लोग इकट्ठा हो सकें और उनमें आपस में मिलन–प्रेम और समझौता हो''.... पवित्र बहा'ई लेख।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Abd-al-baha; The Promulgation of Universal Peace, (Hard Cover ed.),*
2. *Willmette Illinois USA; Baha'I Publishing Trust, 1982.*
3. *Vicki Maxx; A Tale of Two Growing Synogogoues, Washington Jewish Week, 25 September 1995, p.5.*
4. *Rahati V; Sahab F, 1989, Baha'I Temples, Encyclopaedia Iranica, Vol.9, p.2.1, 2.2.*
5. *Abd-al-baha, The Promulgation of Universal Peace, Willmette Illinois; Baha'I s Publication Trust, 1982, p.65-66.*
6. *IBID, p.85.*

7. *Kampala: The Baha'i world; An International Record (Haifa; Baha'I World Center). Vol.13, 1954-63, p.707-19.*
8. *Sydney; Baha'I Temple, Third in the world, Building built on Mona Vale Hilltop, Sydney, Building Lighting, Engineering, 24 September 1958, p.38-39.*
9. *Baha'I house of worship, (Brochure: Sydney, Australia), 1975. Zoworzinksy Francis; Who Built the Temple of Panama? p.6.*
10. *The Baha'I World, vol.13, Frankfurt, 1954-63, p.721-32.*
11. *Julie Badee, An Earthly Paradise, Baha'I house of worship, around the world Oxford; George Ronald Press 1922, p.22.*
12. *Panama City; Tillotson P, Nine gateways to God; British Design for ATemple in Panama, Concrete 6/11, November 1972, pp-22-24.*
13. *Zoworzinksy; p.5.*
14. *Panam city; Tillotson P, Nine gateways to God; British Design for A Temple in Panama, Concrete 6/11, November 1972, p.22-24.*
15. *The Baha'i world; An International record (Haifa; Baha'I world center), Vol.13(1954-63), pp-585.*
16. *IBID.*
17. *Moment M, The Babi and Baha'I Religion, Oxford, 1981, p.442-43.*
18. *Whitemore Bruce W; The Dawning Places, Willmette,Illionois; Baha'I Publishing Trust, 1984, p.77.*
19. *New Delhi; Sabikhi R; Temple Like A Lotus Bud, it's petal slowly unfolding, Architecture, September, 1987, p.72-75.*
20. *Water and light: Two Works by Baha'I Architect, Perspective; Eliza Radials, Israel.*